RESEARCH Psychology

P.G.semester-1st.

By

Dr.Ramendra kr.Singh-2
Deptt. of Psychology

प्रश्न:- शोध-समस्या क्या है? शोध समस्या और शोध-परिकल्पना में अन्तर स्पष्ट करें। (What is research Problem Distinguish between research problem & research hypothesis

शोध की पहली आवश्यकता शोध-समस्या का चयन करना होता है। शोध के लिये ऐसी समस्या का चुनाव करना होता है जिसका स्वरूप वैज्ञानिक तथा समाधान योग्य हो। क्योंकि शोध समस्या ही शोध कार्य की आधारशिला है। इसीलिए कहा गया है- "एक सुप्रस्तावित समस्या स्वयं अपना आधा समाधान होता है।"

शोध-समस्या की उत्पत्ति मानवीय जिज्ञासा से होती है। मैक्गुइगन (Mcguigan) के अनुसार समस्या की उत्पत्ति प्रायः तीन कारणों से होती है:-

(i) सूचनाओं का अभाव:- किसी विषय से संबंधित ज्ञान के संचित भंडार में सूचनाओं की अभाव से समस्या की उत्पत्ति होती है।

(ii) विरोधी परिणाम:- शोध निष्कर्षों में असहमति होने पर समस्या की उत्पत्ति होती है। अर्थात जब एक ही तरह के विषय अथवा तथ्य पर दो अलग-अलग शोध के परिणामों में भिन्नता पाई जाती है।

(iii) तथ्यों की अधूरी व्याख्या:- किसी तथ्य का शोध में व्याख्या रहित अंश के रूप में रहजाना।

शोध समस्या के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिये कुछ प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का उल्लेख करना आवश्यक लगता है। मैक्गुइगन (Mcguigan) के अनुसार:

"समस्या उसे कहते हैं जो व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं द्वारा उत्तर प्राप्त करने योग्य ~~प्रश्न~~ प्रश्न प्रस्तुत करता है।"

प्रसिद्ध वैज्ञानिक टाउनसेण्ड के शब्दों में :—

"समस्या एक ऐसा प्रश्नवाचक कथन होता है जिसमें एक समस्या के समाधान को प्रस्तावित किया जाता है।" इसी प्रकार प्रसिद्ध शोध वैज्ञानिक करलिंजर ने शोध समस्या को परिभाषित करते हुए उसके स्वरूप को और अधिक स्पष्ट करते हुये कहा है :—

"समस्या एक प्रश्नवाचक कथन होता है जो दो या दो से अधिक परिवर्त्यों के पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में पूछा जा सकता है।" शोध समस्या को हमेशा कारण → कार्य रूप में ही प्रस्तुत करना चाहिये। अर्थात स्वतंत्र परिवर्त्य तथा आश्रित - परिवर्त्य के रूप में रखना चाहिये।

इस तरह हम देखते हैं कि उपर्युक्त परिभाषाएँ शोध-समस्या के स्वरूप पर बहुत हद तक प्रकाश डाल देती हैं। इन्हें उन्हें सरल शब्दों में निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है :-

(i) समस्या एक प्रश्नवाचक कथन होता है।

(ii) समस्या का चयन ऐसा होना चाहिये जो समाधान योग्य हो।

(iii) समस्या का वैज्ञानिक स्वरूप दो या दो से अधिक परिवर्त्यों के आपसी सम्बन्धों को दर्शाने वाला होता है।

(iv) इन परिवर्त्यों का आपसी सम्बन्ध कारण → कार्य यानि स्वतंत्र परिवर्त्य एवं आश्रित परिवर्त्य के रूप में प्रकट होता है।

(v) समस्या व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं द्वारा समाधान-योग्य प्रश्न उत्पन्न करता है।

अन्तर

समस्या तथा परिकल्पना में घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी भी शोध समस्या ~~के~~ के हल के लिये शोध कार्य किया जाता है और उसके हल के लिये शोध परिकल्पना की सहायता ली जाती है। इस प्रकार दोनों ही शोध के आवश्यक अंग हैं। इसके बावजूद दोनों में कुछ मूलभूत अंतर हैं जिसे निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।—

(क) (1) शोध कार्य के लिये शोध समस्या अगर पहली आवश्यकता है तो परिकल्पना निर्माण उसके तत्काल बाद

की दूसरी अवस्था अथवा चरण है।

(2) शोध समस्या अगर शोध कार्य का प्रारम्भबिंदु है जिसका समाधान ढूंढ़ना होता है तो परीक्षणीय परिकल्पनाओं का निर्माण करना उस समस्या का प्रस्तावित समाधान होता है।

डॉ० मोहसिन (1984) के शब्दों में, — "The problem is the starting point of research because every research activity is directed towards answering the problem but hypothesis is a conjectural statement about the relationship among two or more variables."

(iii) शोध समस्या और शोध परिकल्पना दोनों दोनों का स्वरूप अस्थाई होता है। दोनों में कारण और कार्य का सम्बन्ध होता है। एक कारण तत्व (Cause factor) है तो दूसरा प्रभाव तत्व (Effect factor) है। जैसे अगर 'A' है तो 'B' उत्पन्न होगा।

(iv) शोध समस्या एक प्रकार का प्रश्न होता है, जबकि परिकल्पना उस समस्या का कल्पित समाधान अथवा हल होता है। यह संभावित उत्तर है जो सत्य, असत्य कुछ भी हो सकता है।

(v) समस्या का अस्तित्व उसके समाधान योग्य होने पर निर्भर करता है, तो दूसरी तरफ परिकल्पना का अस्तित्व उसके परीक्षणीय होने पर निर्भर करता है।

(vi) समस्या के अभाव में शोध कार्य संभव नहीं है, लेकिन परिकल्पना के अभाव में भी शोध कार्य हो सकता है। यानि हर शोध के लिये परिकल्पना का होना कोई जरूरी नहीं है।

(vii) समस्या परिकल्पना पर आधारित नहीं होता है, परन्तु परिकल्पना समस्या पर आधारित होता है।

(viii) समस्या उद्दीपन-तत्व है (Stimulus factor) है। यानि उद्दीपन का कार्य करता है, तो परिकल्पना प्रतिक्रिया (Response factor) की तरह कार्य करता है।

(ix) समस्या अपने आप में व्यापक होती है जबकि

परिकल्पना का क्षेत्र समस्या के तुलना में सीमित होता है।

(X) शोध और परिकल्पना दोनों ही ज्ञान के संचय भंडार को बढ़ाने में सहायता करते हैं। दोनों ही द्वारा नये सत्य की खोज में मदद होती है, पर दोनों की भूमिकायें अलग-अलग होती हैं।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि शोध-समस्या और शोध परिकल्पना में घनिष्ट सम्बन्ध है। किसी समस्या के हल के लिये शोध-कार्य किया जाता है और इस हल में परिकल्पना का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार दोनों से ही शोध को दिशा मिलती है और विज्ञान का विस्तार होता है। परस्पर दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। तथापि दोनों के स्वरूप एवं कार्यों में कुछ मूलभूत अंतर भी है जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है।

परिकल्पना का क्षेत्र समस्या के तुलना में सीमित होता है।

(X) शोध और परिकल्पना दोनों ही ज्ञान के संचय भंडार को बढ़ाने में सहायता करते हैं। दोनों ही द्वारा नये सत्य की खोज में मदद होती है, पर दोनों की भूमिकायें अलग-अलग होती हैं।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि शोध-समस्या और शोध परिकल्पना में घनिष्ट सम्बन्ध है। किसी समस्या के हल के लिये शोध-कार्य किया जाता है और इस हल में परिकल्पना का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार दोनों से ही शोध को दिशा मिलती है और विज्ञान का विस्तार होता है। परस्पर दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। तथापि दोनों के स्वरूप एवं कार्यों में कुछ सूक्ष्म अंतर भी है जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है।

RAMENDRA KUMAR SINGH II

24|10|24

Scanned with OKEN Scanner